6 लोक नृत्य

- छत्तीसगढ़ के नृत्य समस्त भारत में अपनी एक विशिष्ट पहचान रखते हैं। मानव की प्राचीनतम संस्कृति यहाँ भित्ति चित्रों, नाट्यशालाओं, मंदिरों और लोक नृत्यों के रूप में आज भी विद्यमान हैं।
- छत्तीसगढ़ के लोक नृत्यों में बहुत कुछ समानता होती है। ये नृत्य मात्र मनोरंजन के साधन नहीं हैं, बल्कि जातिय नृत्य, धार्मिक अनुष्ठान और ग्रामीण उल्लास के अंग भी हैं।
- देव–पितरों की पूजा–अर्चना के बाद लोक जीवन प्रकृति के सहचर्य के साथ घुल मिल जाता है। यहाँ प्रकृति के अनुरूप ही ऋतु परिवर्तन के साथ लोक नृत्य अलग–अलग शैलियों में विकसित हुआ।
- यहाँ के लोक नृत्यों मे मांदर, झांझ, मंजीरा और डंडा प्रमुख रूप से प्रयुक्त होता है।
- छत्तीसगढ़ के निवासी नृत्य करते समय मयूर के पंख, सुअर के सिर्से, शेर के नाखून, कौड़ी और गुरियों की माला आदि आभूषण धारण करते हैं।

कर्मा नृत्य

- छत्तीसगढ़ के आदिवासी एवं गैर–आदिवासी सभी का यह लोक मांगलिक नृत्य है।
- भादो मास की एकादशी को उपवास के पश्चात करमवृक्ष की शाखा को घर के आंगन या चौगान में रोपित किया जाता है।
- दूसरे दिन कुल देवता को नवान्न समर्पित करने के बाद ही उसका उपभोग शुरू होता है। कर्मा नृत्य नई फसल आने की खुशी में किया जाता है।
- यह नृत्य छत्तीसगढ़ की लोक–संस्कृति का पर्याय है।
- बैगा कर्मा, गोंड़ कर्मा और भुंइयाँ कर्मा आदिजातीय नृत्य माना जाता है।
- छत्तीसगढ़ के एक लोक नृत्य में करमसेनी देवी का अवतार गोंड के घर में, दूसरे गीत में घसिया के घर माना गया है।
- कर्मा नृत्य में स्त्री–पुरुष सभी भाग लेते हैं।
- यह वर्षा ऋतु को छोड़कर सभी ऋतुओं में किया जाता है।
- सरगुजा के सीतापुर, रायगढ़, जशपुर और धरमजयगढ़ के आदिवासी इस नृत्य को साल में सिर्फ चार दिन करते हैं।

चोला रोवत हे राम बिन देखे परान...दादर झांवर झाड़ी ढूंढौ डोंगर बीच मंझाय।
सबै पतेरन तोला ढूंढौ कहाँ लुके हे जाय।।

- एकादशी कर्मा नवाखाई के उपलक्ष्य में पुत्र की प्राप्ति, पुत्र के लिए मंगल कामनाएं, अठई नामक कर्मा नृत्य क्वांर में भाई–बहन के प्रेम संबंध, दशई नामक कर्मा नृत्य और दीपावली के दिन कर्मा नृत्य युवक–युवतियों के प्रेम से लिप्त होता है।
- कर्मा नृत्य की अनेक शैलियाँ हैं, लेकिन छत्तीसगढ़ में चार शैलियाँ प्रचलित हैं, जिसमें:–
  1. झूमर, जो नृत्य झूम–झूम कर नाचा जाता है, उसे 'झूमर नृत्य' कहते हैं।
  2. लंगड़ा, एक पैर झुकाकर गाया जाने वाला नृत्य 'लंगड़ा नृत्य' है।
  3. ठाढ़ा, लहराते हुए करने वाले नृत्य को 'लहकी' और खड़े होकर किया जाने वाला नृत्य 'ठाढ़ा' कहते हैं।
  4. खेमटा, आगे–पीछे पैर रखकर, कमर लचकाकर किया जाने वाला नृत्य 'खेमटा नृत्य' है।
- कर्मा नृत्य में मांदर और झांझ–मंजीरा प्रमुख वाद्ययंत्र हैं। इसके अलावा टिमकी, ढोल, मोहरी आदि का भी प्रयोग होता है।
- कर्मा नर्तक मयूर पंख का झाल पहनता है, पगड़ी में मयूर पंख के कांड़ी का झालदार कलगी खोंचता है। रुपया, सुताई, बहुंटा और करधनी जैसे आभूषण पहनता है। कलई में चूरा और बाँह में बहुटा पहने हुए युवक की कलाइयों और कोहनियों का झूल, नृत्य की लय में बड़ा सुन्दर लगता है।
- इस नृत्य में संगीत योजनाबद्ध होती है। राग के अनुरूप ही इस नृत्य की शैलियाँ बदलती है। इसमें गीता के टेक, समूह गान के रूप में पदांत में गूँजते रहता है। पदों में ईश्वर की स्तुति से लेकर श्रृंगार परक गीत होते हैं।
- मांदर और झांझ की लय–ताल पर नर्तक भाँवर लगाते, हिलते–डुलते, झुकते–उठते हुये वृत्ताकार नृत्य करते हैं।

डंडा नृत्य या सैला नृत्य

पहिली डंडा ठोकबो रे भाई, काकर लेबो नाम रे जोर,
गावे गउंटिया ठाकुर देवता, जेकर लेबो नाम रे जोर।
आगे सुमिरो गुरु आपन ला, दूजे सुमिरों राम जोर,
माता–पिता अब आपन सुमिरों, गुरु के सुमिरों नाम रे जोर।

- डंडा नृत्य छत्तीसगढ़ राज्य का लोकनृत्य है। इस नृत्य को 'सैला नृत्य' भी कहा जाता है।
- यह पुरुषों का सर्वाधिक कलात्मक और समूह वाला नृत्य है।
- डंडा नृत्य में ताल का विशेष महत्व होता है। डंडों की मार से ताल उत्पन्न होता है। यही कारण है कि इस नृत्य को मैदानी भाग में 'डंडा नृत्य' और पर्वतीय भाग में 'सैला नृत्य' कहा जाता है।
- डंडा नृत्य करने वाले समूह में 46 से लेकर 50 या फिर 60 तक सम संख्या में नर्तक होते हैं। ये नर्तक घुटने से उपर तक धोती–कुर्ता और जैकेट पहनते हैं। इसके साथ ही ये लोग गोंदा की माला से लिपटी हुई पगड़ी भी सिर पर बाँधकर धारण करते हैं। इसमें मोर के पंख की कडियों का झूल होता है। इनमें से कई नर्तकों के द्वारा रूपिया सुताइल, बहुंटा, चूरा, और पाँव में घुंघरू आदि पहने जाते हैं। आँख में काजल, माथे पर तिलक और पान से रंगे हुए होंठ होते हैं।
- एक कुहकी देने वाला, जिससे नृत्य की गति और ताल बदलता है। एक मांदर बजाने वाला और दो–तीन झांझ–मंजीरा बजाने वाले भी होते हैं। बाकी बचे हुए नर्तक इनके चारों ओर वृत्ताकार रूप में नाचते हैं।
- नर्तकों के हाथ में एक या दो डंडे होते हैं। नृत्य के प्रथम चरण में ताल मिलाया जाता है।दूसरा चरण में कुहका देने पर नृत्य चालन और उसी के साथ गायन होता है। नर्तक एक दूसरे के डंडे पर डंडे से चोंट करते हैं।
- कभी उचकते हुए, कभी नीचे झुककर और अगल–बगल को क्रम से डंडा देते हुए, झूम–झूमकर फैलते–सिकुड़ते वृत्तों में त्रिकोण, चतुषकोण और षटकोण की रचना करते हुए नृत्य किया जाता है।
- डंडे की समवेत ध्वनि से एक शोरगुल भरा दृश्य उपस्थित होता है।
- नृत्य के आरंभ में ठाकुर देव की वंदना फिर माँ सरस्वती, गणेश और राम–कृष्ण के उपर गीत गाए जाते हैं।
- डंडा नृत्य कार्तिक माह से फाल्गुन माह तक होता है। पौष पूर्णिमा यानी की छेरछेरा के दिन मैदानी भाग में इसका समापन होता है।
- सुप्रसिद्ध साहित्यकार पंडित मुकुटधर पाण्डेय ने इस नृत्य को छत्तीसगढ का रास कहकर सम्बोधित किया है।

सुवा नृत्य

- सुवा नृत्य छत्तीसगढ़ राज्य की स्त्रियों का एक प्रमुख नृत्य है, यह नृत्य समूह में किया जाता है।
- स्त्री मन की भावना, उनके सुख–दुख की अभिव्यक्ति और उनके अंगों का लावण्य 'सुवा नृत्य' या 'सुवना' में देखने को मिलता है।
- 'सुवा नृत्य' का आरंभ दशहरा के अगले दिन से ही हो जाता है। इसके बाद यह नृत्य अगहन मास तक चलता है।
- यह नृत्य वृत्ताकार रूप में किया जाता है।
- महिलाएं धान से भरी टोकरी में मिट्टी का सुवा रखती है। कहीं–कहीं पर एक तथा कहीं–कहीं पर दो सुवा रखे जाते हैं। ये भगवान शिव और पार्वती के प्रतीक होते हैं।
- टोकरी में रखे सुवे को हरे रंग के नए कपड़े और धान की नई मंजरियों से सजाया जाता है।
- सुग्गी को घेरकर स्त्रियाँ ताली बजाकर नाचती हैं और साथ ही साथ गीत भी गाये जाते हैं।
- इन स्त्रियों के दो दल होते हैं। पहला दल जब खड़े होकर ताली बजाते हुए गीत गाता है, तब दूसरा दल अर्द्धवृत्त में झूककर ऐड़ी और अंगूठे की पारी उठाती और अगल–बगल तालियाँ बजाकर नाचतीं और गाती हैं।

पंथी नृत्य

तन्ना – नन्ना नन्ना नन्ना वारे नन्ना।
एक पेड़ अँवरा दूसर पेड़ थँवरा, नाम ले के आए साहब नाम ले के आए।
माला मुँगवा छुटिस कंठी पहिनाए, अधरे के नागर अधरे जुवाड़ी, अधर मा धोतिया सुखाए।

- गुरु घासीदास के पंथ के लिए 18 दिसम्बर अति महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि इस दिन सतनामी अपने गुरु की जन्म तिथि के अवसर पर 'जैतखाम' की स्थापना कर 'पंथी नृत्य' में मग्न हो जाते हैं।
- यह द्रुत गति का नृत्य है, जिसमें नर्तक अपना शारीरिक कौशल और चपलता प्रदर्शित करते हैं।
- नृत्य का समापन तीव्र गति के साथ चरम पर होता है। इस नृत्य की तेजी, नर्तकों की तेजी से बदलती मुद्राएँ एवं देहगति दर्शकों को आश्चर्यचकित कर देती है।
- पंथी नर्तकों की वेशभूषा सादी होती है। सफेद रंग की धोती, कमरबन्द तथा घुंघरू पहने नर्तक मृदंग एवं झांझ की लय पर आंगिक चेष्टाएँ करते हुए मंत्र–मुग्ध प्रतीत होते हैं। सादा बनियान, घुटने तक साधारण धोती, गले में हार, सिर पर सादा फेटा और माथे पर सादा तिलक।
- महिलाएं पिली साड़ी एवं सिर पर कलश धारण करती हैं।
- अधिक वस्त्र या शृंगार इस नर्तकों की सुविधा की दृष्टि से अनुकूल भी नहीं है।
- वर्तमान समय के साथ इस नृत्य की वेशभूषा में भी कुछ परिवर्तन आया है। अब रंगीन कमीज और जैकेट भी पहन लिये जाते हैं।
- मांदर एवं झाँझ पंथी के प्रमुख वाद्ययंत्र होते हैं। अब बेंजो, ढोलक, तबला और केसियो का भी प्रयोग होने लगा है।
- मुख्य नर्तक पहले गीत की कड़ी उठाता है, जिसे अन्य नर्तक दोहराते हुए नाचना शुरू करते हैं।
- प्रारंभ में गीत, संगीत और नृत्य की गति धीमी होती है। जैसे–जैसे गीत आगे बढ़ता है और मृदंग की लय तेज होती जाती है, वैसे–वैसे पंथी नर्तकों की आंगिक चेष्टाएँ भी तेज होती जाती हैं। गीत के बोल और अंतरा के साथ ही नृत्य की मुद्राएँ बदलती जाती हैं, बीच–बीच में मानव मीनारों की रचना और हैरतअंगेज कारनामें भी दिखाए जाते हैं। इस दौरान भी गीत–संगीत व नृत्य का प्रवाह बना रहता है और पंथी का जादू सिर चढ़कर बोलने लगता है।
- प्रमुख नर्तक बीच–बीच में 'अहा–अहा' शब्द का उच्चारण करते हुए नर्तकों का उत्साहवर्धन करता है। गुरु घासीदास बाबा का जयकारा भी किया जाता है।
- थोड़े–थोड़े अंतराल के बाद प्रमुख नर्तक सीटी भी बजाता है, जो नृत्य की मुद्राएँ बदलने का संकेत होता है।

रावत नृत्य

गौरी के गनपति भये, अंजनी के हनुमान रे।
कालिका के भैरव भये, कौसिल्या के लछमन राम रे।।

- इस नृत्य को 'अहिरा' या 'गहिरा' नृत्य भी कहा जाता है।
- छत्तीसगढ़ में ही नहीं अपितु सारे भारत में रावतों की अपनी संस्कृति है। उनके रहन–सहन, वेश–भूषा, खान–पान, रीति–रिवाज भी विभिन्न प्रकार के हैं।
- देश के कोन–कोने तक शिक्षा के पहुँचने के बाद भी रावतों ने अपनी प्राचीन धरोहरों को बिसराया नहीं है।
- यादव, पहटिया, ठेठवार और राउत आदि नाम से संसार में प्रसिद्ध इस जाति के लोग इस नृत्य पर्व को 'देवारी' (दीपावली) के रूप मे मनाते हैं।

गेड़ी नृत्य

- छत्तीसगढ़ राज्य के प्रसिद्ध लोक नृत्यों में से एक है।
- छत्तीसगढ़ का गेड़ी नृत्य एक प्रभावशाली नृत्य है, जो नर्तकों के शारीरिक संतुलन को दर्शाता है।
- यह नृत्य लकड़ी के डंडों के ऊपर शारीरिक संतुलन बनाये रखकर पद संचालन के साथ किया जाता है।
- प्रायः गेड़ी नृत्य सावन कृष्ण अमावस्या अर्थात् हरेली के दिन किया जाता है।
- नृत्य करने वाले नर्तकों की कमर में कौड़ी से जड़ी पेटी बंधी होती है।
- पारम्परिक लोकवाद्यों की थाप के साथ ही यह नृत्य जोर पकड़ता जाता है।
- इस नृत्य के वाद्यों में मांदर, शहनाई, चटकुला, डफ, टिमकी तथा सिंह बाजा प्रमुख हैं।

फाग नृत्य

- यह बसंत ऋतु के फाल्गुन माह में होली के अवसर पर किया जाने वाला छत्तीसगढ़ का लोकप्रिय लोकनृत्य है।
- आदिवासी समुदाय के गोंड़ एवं बैगा जनजाति के लोग विशेष रूप से होली के अवसर पर फाग नृत्य आयोजित करते हैं।
- इस नृत्य में लकड़ी के मुखौटे एवं लकड़ी की चिड़िया आदि का प्रयोग करते हुए गाँव के समस्त युवक–युवती एवं प्रौढ़ आदिवासी भी उल्लास के साथ हिस्सा लेते हैं।
- प्रमुख वाद्य यंत्र– नगाड़ा, टिमकी, मांदर, झांझ आदि हैं। फाग गीत गाते समय बीच–बीच में दोहे का प्रयोग किया जाता है।